B.Ed IInd year

Subject :- Knowledge, Language Curriculum

Topic :- भाषा कौशल के रूप

भाषा कौशल

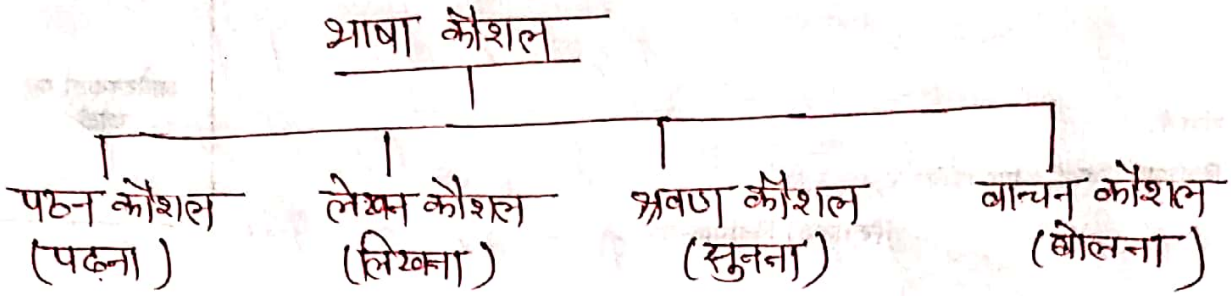

- पठन कौशल (पढ़ना)
- लेखन कौशल (लिखना)
- श्रवण कौशल (सुनना)
- वाचन कौशल (बोलना)

1 पठन कौशल (पढ़ना)

⇒ पठन या वाचन शिक्षा का पर्यायवाची माना जाता है।

⇒ वाचन शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के वच् धातु से हुई है, जिसका अर्थ पढ़ना, पाठ करना, उच्चारण, घोषणा आदि है।

⇒ पठन एक कला है, एक कौशल है। ज्ञान प्राप्त करने की एक कुंजी है।

⇒ पुस्तक, मैगजीन आदि को पढ़ना ही केवल पठन नहीं है, ~~[illegible]~~ उसे समझना भी और समझकर अर्थ ग्रहण करना अतिआवश्यक है।

⇒ पठन दो रूपो मे किया जाता है 1- सस्वर पठन
2. मौन पठन

⇒ पठन मे साधारण रूप से पढ़ने की अपेक्षा शुद्धता, स्पष्टता और प्रभावपूर्णता अधिक होती है।

पठन कौशल का सम्बन्ध क्रियात्मक पक्ष से होता है। इसलिए पठन कौशल का विकास निरन्तर पढ़ने के अभ्यास से ही हो सकता है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

2. लेखन कौशल (लिखना)

⇒ जब व्यक्ति अपने भावो और विचारो की अभिव्यक्ति लिखित रूप मे करता है तब उसे लेखन कहते है।

⇒ लेखन मे वर्तनी का विशेष महत्व होता है।

⇒ लेखन मे भाषा की शुद्धता पर विशेष बल दिया जाता है।

⇒ भाषा का मूल रूप मौखिक होता है। लेखन की दृष्टि से लिपि का ज्ञान होना प्रथम शर्त है।

⇒ लिखित भाषा के तीन मूल तत्व होते है।
1. मौखिक, 2. शब्द ज्ञान, 3. वाक्य रचना

⇒ लिखित भाषा की शिक्षा का अर्थ है - इन तीनो मूल तत्वो की शिक्षा।

3. श्रवण कौशल (सुनना)

⇒ श्रवण कौशल, वाचन सुनने और सुनकर उसका अर्थ एवं भाव समझने की क्रिया को कहा जाता है।

⇒ श्रवण कौशल का सैद्धान्तिक पक्ष ध्वनि विज्ञान मे आता है।

⇒ मौखिक भाषा या वाचन के माध्यम से जो विचार और भाव अभिव्यक्त किये जाते है, वे सुनकर ही समझे जाते है।

⇒ भाषा के सन्दर्भ मे अर्थ, बोध अथवा भाव प्रतीति सुनने के आवश्यक तत्व माने जाते है।

Scanned with CamScanner

⇒ सुनने वाले की ग्रहण क्षमता सामान्य एवं क्रियाशील हो, ध्वनियों से शब्द-बोध हो, सुनने वाला सजग हो व सुनने मे रुचि एवं एकाग्रता रखता हो, बोलने वाले के हाव-भावों से उसकी अभिव्यक्ति का अनुमान लगाया जा सकता हो, एवं वाचन की प्रभावशीलता हो।

4. वाचन कौशल (वाचन)

⇒ वाचन एक कला है, एक कौशल है।

⇒ वाचन व्यक्ति का सबसे बड़ा आभूषण है। उसकी संस्कृति की पहचान है।

⇒ व्यक्ति का एकमात्र आभूषण उसकी मधुर वाणी ही है। मधुर वाणी अमृत के समान होती है।

⇒ वाचन मे भावाभिव्यक्ति का सतत प्रवाह बना रहता है।

⇒ वाचन मे भावात्मक पक्ष की प्रधानता रहती है।

⇒ वाचन मे स्वरो के उतार-चढाव से शब्दो की शक्ति का आभास मिलता है। वाचन के अन्तर्गत मुख के अवयवो की क्रियाशीलता अधिक महत्व रखती है।

⇒ वाचन के दो मुख्य आधार होते है।—

1. वाचन मुद्रा
2. वाचन शैली

P.T.O.

Scanned with CamScanner

⇒ वाचन सामग्री हाथ से पकड़ने का तरीका, लय-गति, ताल, नेत्र-मुख मुद्रा तथा सुन्दर और प्रवाहमय ढंग से वाचन करना।

* भाषा कौशल की विशेषताएँ *

* भाषा के चार कौशल होते हैं। 1- लिखना
  2. पढ़ना
  3. बोलना
  4. सुनना।
* भाषा कौशल से शाब्दिक अन्त: प्रक्रिया सशक्त होती है।
* भाषा कौशल का उद्देश्य बोधगम्यता होता है।
* समस्त भाषा कौशल प्रवाह को दो भागो मे विभाजित किया गया है - लिखना-पढ़ना, एवं बोलना-सुनना।
* भाषा कौशल के दो प्रमुख घटक - अभिव्यक्ति, पाठ्यवस्तु
* भाषा कौशल मे सभी इन्द्रियाँ क्रियाशील रहती हैं।
* भाषा, कौशल का व्यावहारिक पक्ष होता है।
* सम्प्रेषण का भाषा कौशल मुख्य साधन और माध्यम दोनो है।
* भाषा कौशलो का मुख्य आधार भाषा विज्ञान और व्याकरण को माना जाता है।
* अभ्यास और प्रशिक्षण के माध्यम से भाषा कौशल अर्जित किए जाते हैं।

Thank you

by
Mr. Ravi Kumar
B.R.C. Deoband (SRG)